देश दर्शन

पूर्ण संख्या—४९

पुस्तकाकार सचित्र मासिक पत्र

देश-दर्शन में प्रति मास किसी एक देश का सर्वाङ्ग पूर्ण वर्णन रहता है। लेख प्रायः यात्रा के आधार पर लिखे जाते हैं। आवश्यक नकशों और चित्रों के होने से देश-दर्शन का प्रत्येक अङ्क पढ़ने और संग्रह करने योग्य होता है।

मार्च १६३६ से सितम्बर १६४३ तक देश-दर्शन के निम्नाङ्क प्रकाशित हो चुके हैं:—प्रत्येक अंक का मूल्य ।=) है।

लङ्का, इराक, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र भाग १, मिस्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेनमार्क, हालैंड, रूस, थाई (श्याम) देश, बल्गेरिया, अल्सेस लारेन, काश्मीर, जापान, ग्वालियर, स्वीडन, मलय-प्रदेश, फिलीपाइन, तीर्थ दर्शन, हवाई द्वीपसमूह, न्यूज़ीलैंड, न्यूगिनी, आस्ट्रेलिया, मेडेगास्कर, न्यूयार्क, सिरिया, फ्रांस, अल्जीरिया, मरक्को, इटली, ट्यूनिस, आयरलैंड, अन्वेषक दर्शन भाग १,२,३, नैपाल, स्विज़रलैण्ड, आगरा और अरब।

'भूगोल'-कार्यालय ककरहाघाट, इलाहाबाद।

अक्टूबर, १९४३] **देश-दर्शन** [कार्तिक २०००

वर्ष ५] संख्या ५
पूर्ण संख्या ४९

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-	वार्षिक मूल्य ४)
Foreign Rs. 6/-	विदेश में ६)
This copy As. -/6/-	इस प्रति का ।=)

विषय-सूची
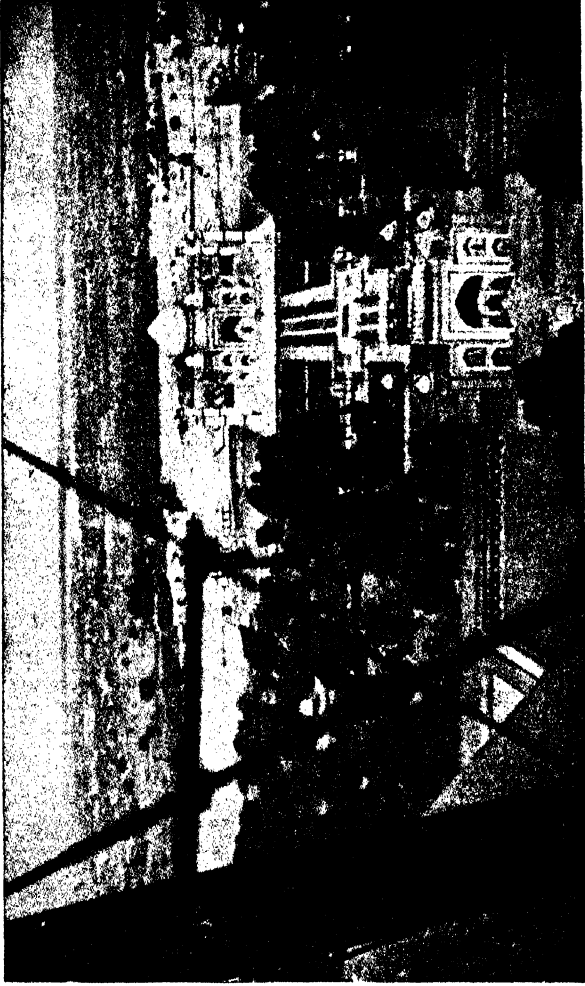
हवाई जहाज़ से ताजमहल का दृश्य
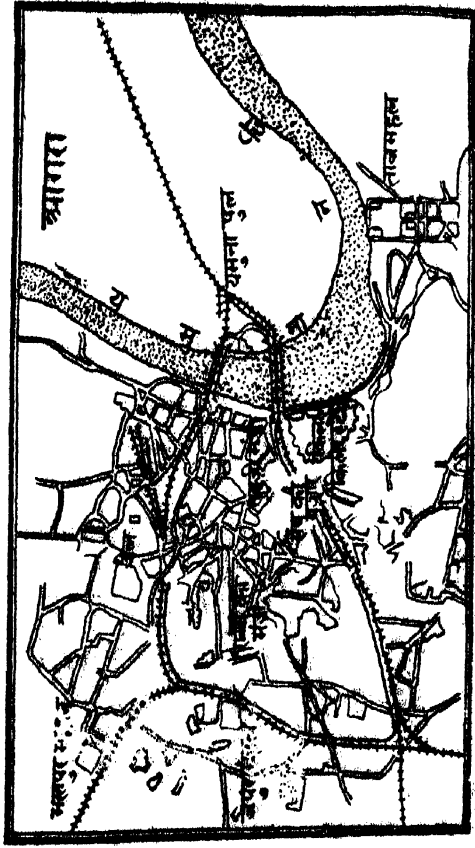
आगरा शहर की स्थिति

स्थिति, सीमा और विस्तार

विषमाकार आगरा ज़िला संयुक्तप्रान्त के उत्तरी पश्चिमी कोने में स्थित है। इसके पश्चिम में भरतपुर राज्य, दक्षिण में ग्वालियर और धौलपुर राज्य हैं। उत्तर में मथुरा और एटा जिला। पूर्व में मैनपुरी और इटावा जिला है। कुछ दूर तक यमुना नदी सीमा बनाती है। आगरे जिले की अधिक से अधिक लम्बाई ७८ मील और चौड़ाई ३५ मील है। इसका क्षेत्रफल १८५४ वर्ग मील है।

आगरा ज़िला ४ प्राकृतिक भागों में बँटा हुआ है।

(१) इतमादपुर और फीरोज़ाबाद तहसीलें यमुना के उत्तर में हैं। यह दोनों द्वाबा के अंग हैं।

(२) यमुना और उतांगन के बीच ऊँची समतल भूमि है। यहीं आगरा करौली फतेहाबाद और अधिकांश खैरागढ़ की तहसीलें हैं।

(३) यमुना और चम्बल के बीच में बाह की तंग तहसील है।

(४) खैरागढ़ तहसील का शेष भाग एक अलग प्रदेश है। उतांगन के आगे यह प्रदेश भरतपुर और धौलपुर राज्यों के बीच में स्थित है।

देश दर्शन

(१) द्वाबा में स्थित आगरा जिले की दो तहसीलों का क्षेत्रफल ४८० वर्ग मील है। इस ऊंचे मैदान का धरातल समतल है। केवल कहीं कहीं यमुना की
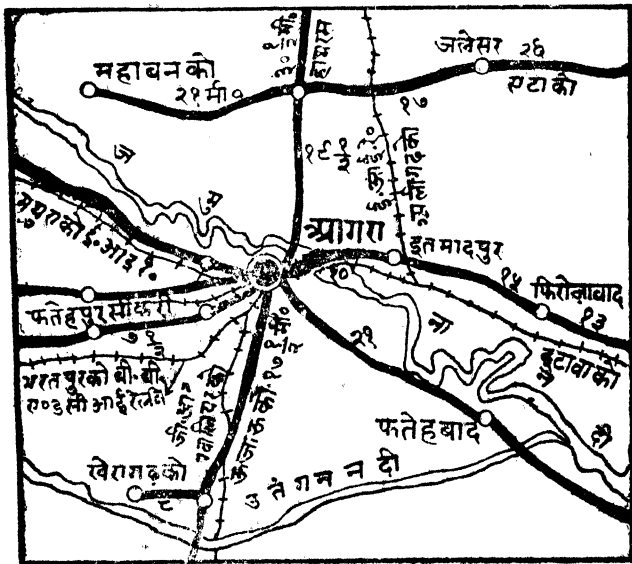
एक दो छोटी छोटी सहायक नदियों ने इसे काट कर विषम बना दिया है। कहीं कहीं रेतीले टीले भी हैं। पर प्रदेश बड़ा उपजाऊ है। इसकी मिट्टी कुछ पीली और मटियार है। केवल यमुना के पड़ोस में नालों से कटे फटे

ऊंचे किनारे हैं जो खेतो के योग्य नहीं हैं। यहां बबूल के पेड़ हैं अथवा ढोर चराये जाते हैं। यमुना का खादर भी उपजाऊ नहीं है। यहां झाऊ और कांस होते हैं जो घर छाने के काम आते हैं।

(२) यमुना और उतांगन के बीच का प्रदेश मटियार का बना है। यह जिले का मध्यवर्ती भाग है। खोर नदी और एक दो नालों ने इसे काट दिया है। कुछ ऊंचे टीले और ऊंचे नीचे भागों को छोड़कर यह प्रदेश प्राय· समतल है। यमुना और उतांगन नदियों के पास कछार है।

(३) यमुना चम्बल का द्वाबा औसत से आठ या नौ मील चौड़ा है और ४२ मील लम्बा है। बीच में यह अधिक चौड़ा है। इसका आधा भाग यमुना और चम्बल के गहरे सूखे नालों से घिरा हुआ है। बीच वाले भाग में भूमि अच्छी है। उत्तर की ओर बालू हो गई है। दक्षिण की ओर चम्बल के पड़ोस में कुछ चिकनी मिट्टी है। पश्चिम की ओर इस चिकनी मिट्टी का रंग काला है। इसे मार कहते हैं। यह बुन्देलखंड की मिट्टी से मिलती जुलती है। पूर्व की कड़ी मटियार

है। यमुना और चम्बल के पड़ोस में नीची भूमि उपजाऊ है।

(४) उतांगन के आगे खैरागढ़ तहसील में उत्तरी सीमा के पास पहाड़ियाँ मिलती हैं। कुछ टीले अकेले खड़े हैं। कुछ नालों के पास हैं। कहीं मटियार है। कहीं भूड़ है।

इस प्रकार जिले के अधिकतर भाग में गंगा की कांप है, यह काँप बहुत (५०० फुट से अधिक) गहरी है। इसकी तली समुद्र-तल से केवल पांच फुट ऊँची है। यह कांप यहां मध्यभारत से आने वाली मिट्टी से मिल गई है। करौली तहसील में विन्ध्याचल की टूटी फूटी पहाड़ियां हैं। मैदान के धरातल से पहाड़ियां लगभग १५० फुट ऊंची हैं। इनका रंग कहीं लाल और कहीं भूरा या मटीला है। जिस पहाड़ी पर फतेहपुर सीकरी बना है वहां अच्छे इमारती पत्थर मिलते हैं। आगरा और दिल्ली की मस्जिदें और दूसरे भवन इसी पत्थर के बने हैं। पहाड़ियों का ढाल दक्षिण-पूर्व की ओर है। उतांगन नदी के आगे खैरागढ़ की पहाड़ियां अधिक ऊँची हैं। आगरा और भरतपुर के बीच में सीमा बनाने

वाली पहाड़ी को विन्ध्याचल कहते हैं। यह ३० मील लम्बी है। इसकी अधिक से अधिक ऊंचाई समुद्र-तल से ८१० फुट है। बहुत सी पहाड़ियाँ पड़ोस की भूमि से २० से लेकर ६० फुट तक ऊँची हैं। लेकिन यमुना और चम्बल के किनारे (करार) नीची कछारो भूमि के ऊपर ७० फुट से १५० फुट तक ऊंचे खड़े हैं। यमुना के उत्तर में मैदान की उंचाई ५५७ फुट है। फीरोज़ाबाद तहसील में यह केवल ५४० फुट रह गई है। उतांगन के दक्षिण में भूमि कुछ ऊँची होती जाती है। खैरागढ़ के दक्षिण-पश्चिम में जिले की सब से अधिक ऊंची भूमि है।

नदियाँ

यमुना नदी करौनी के उत्तर में पहले इस जिले को छूती है। कुछ दूर तक यह मथुरा और आगरा जिलों के बीच में सीमा बनाती है। उतांगन के सङ्गम के आगे यह बाह तहसील के उत्तर में बहती है और इस जिले को मैनपुरी और इटावा जिलों से अलग करती है। खिलौली के पास यमुना आगरा जिले को छोड़कर

इटावा जिले में प्रवेश करती है। यमुना का मार्ग बड़ा टेढ़ा और मोड़दार है। आगरा जिले में यमुना की लम्बाई १४५ मील है। सीधा मार्ग इसका आधा है। यमुना के किनारे बड़े कड़े और स्थायी हैं। स्थान स्थान पर नालों ने इन्हें काट दिया है। यमुना की चौड़ाई एक फर्लांग और कहीं दो फर्लांग है। गहराई अधिक नहीं है। वर्षा ऋतु में भी इसकी गहराई १० फुट से अधिक नहीं रहती है। शेष ऋतुओं में दो या तीन फुट रह जाती है। आगरा नहर के निकल जाने से यमुना नाव चलाने योग्य नहीं रही। आगरे में यमुना पर पक्के पुल बने हैं। और स्थानों में लोग यमुना को पैदल या नाव द्वारा पार करते हैं। नरहरा के पास झिरना या कारों यमुना में सब से पहले आगरा जिले में मिलती हैं। यह नदी बुलन्दशहर, अलीगढ़ और मथुरा जिलों को पार करके यहां आती है। सिरसा और सेंगर छोटी नदियां हैं।

उतांगन या बानगङ्गा २०० मील की दूरी पर जैपुर राज्य से निकलती है। भरतपुर राज्य को पार करके कुछ दूर तक यह आगरा और भरतपुर राज्य के बीच में सीमा बनाती है। खैरागढ़ तहसील को पार करके यह

पहले धौलपुर राज्य की सोमा बनाती है। फिर यह आगरा जिले में दूसरी बार प्रवेश करती है। आगरा जिले में ६३ मील बहने के बाद फतेहाबाद के पूर्व में रिहौली के पास यह यमुना में मिल जाती है। वर्षा ऋतु में यह प्रायः सूखी पड़ी रहती है। खारी नदी इसकी प्रधान सहायक नदी है। यह नदी भी भरतपुर राज्य में निकलती है।

चम्बल नदी मालवा में म्हो के पास बिन्ध्याचल के उत्तरी ढालों से निकलती है। धुर पश्चिम समौना के पास यह आगरा जिले को छूती है। जिले की सीमा बनाती हुई इटावा जिले में यह यमुना से मिल जाती है। इनके किनारे बहुत ऊंचे और सपाट हैं। ऊंचे किनारों के बीच में चौड़ो घाटी है। इन्हीं किनारों के बीच में चम्बल नदी इधर उधर बहती रहती है। वर्षा ऋतु में इसमें भयानक बाढ़ आती है। इस समय यमुना से भी अधिक पानी हो जाता है। खुश्क ऋतु में यह साधारण नदी हो जाती है और रेतीली तली में इधर उधर बहती है इसका पानी प्रायः गहरा नीला रहता है। यमुना के मटीले पानी से एकदम भिन्न मालूम होती है। आगरा जिले में चम्बल पर कहीं भी पुल नहीं बना है। वर्षा ऋतु में नाव द्वारा इसे पार करते हैं। खुश्क ऋतु में इसमें पांज हो जाती है।

आगरा जिले में १८ फीसदी भूमि ऊसर अथवा खेती के योग्य नहीं है इसमें कहीं रेह है, कहीं उजाड़ टीले हैं। कुछ भागों में ढाक-बबूल का जङ्गल या घास है। गांवों के पड़ोस में आम, जामुन, बेल आदि पेड़ों के बगीचे हैं। शेष बड़े भाग में खेती होती है।

जलवायु

आगरा जिले की जलवायु पड़ोस के और जिलों की अपेक्षा अधिक खुश्क और गरम है। गरमी की ऋतु लम्बी होती है। पानी कम बरसता है। अप्रैल से अगस्त तक यहां तापक्रम दूसरे जिलों से अधिक ऊँचा रहता है। अक्तूबर से शीतकाल का आरम्भ होता है।

जनवरी में अक्सर पाला पड़ता है। इस समय नदी में पानी भरने से उनके ऊपर से प्रातःकाल के समय कभी कभी बरफ की तह इकट्ठी की जा सकती है। मार्च के अन्त में राजपूताना की ओर से गरम हवायें चलने लगती हैं। कभी कभो आँधी भी आती है। जनवरी महीने का तापक्रम ५९ अंश और जून का ९५ अंश रहता है। कभी कभी छाया में जून मास का तापक्रम ११७ अंश हो जाता है। वर्षा होने पर तापक्रम कम हो जाता है। औसत से इस जिले में २६ इञ्च वर्षा होती है। खैरागढ़ में २४ इञ्च और फीरोज़ाबाद में २७ इञ्च वर्षा होती है। किसी वर्ष ४७ इंच और किसी (अकाल के) वर्ष १२ इंच वर्षा होती है।

उपज

ज्वार, बाजरा, अरहर खरीफ की प्रधान फसलें हैं। कपास की फसल बड़े काम की होती है और सारे जिले में उगाई जाती है। कपास आषाढ़ में बोई जाती है और कार्तिक से माघ तक बीनी जाती है। मोठ, उर्द, मूंग भी खरीफ की फसलें हैं। गेहूँ, चना, गुजई और बाजरा रबी की फसलें हैं। वर्षा कम होने से सिंचाई की जरूरत पड़ती है। अधिकतर सिंचाई कुओं से होती है। कुओं में पानी अधिक गहराई पर मिलता है। कुछ भाग नहरों (फतेहपुर सीकरी, गङ्गा नहर और आगरा नहर) द्वारा सींचे जाते हैं। अकबर के समय में पहाड़ियों के बीच में फतेहपुर सीकरी के पास बांध बनवाया था।

संक्षिप्त इतिहास

आगरा जिले के कई स्थान पांडवों से सम्बन्ध रखते हैं। कहते हैं पिन्हात नाम उन्हीं से लिया गया है। उतांगन या बाणगंगा का स्रोत उस स्थान पर है जहां अर्जुन ने अपना बाण छोड़कर गड्ढा बना दिया था। आगरा जिले के उत्तरी-पश्चिमी भाग सूरसेन के राज्य में सम्मिलित थे। इस राज्य की राजधानी मथुरा थी। बटेश्वर और सूर्यपुर गांव बहुत पुराने हैं। यहां पुराने समय के सिक्के मिले हैं। साल्मान नामी एक फारसी कवि ने (जो ११३१ ई० में मरा) लिखा है कि भीषण आक्रमण के बाद महमूद गज़नवी ने आगरे के किले को जयपाल से छीना था। तारीखे दाऊदी में लिखा है कि महमूद ने आगरे को (जो कंस के समय से हिन्दुओं का एक समृद्धिशाली नगर था) ऐसा नष्ट किया कि यह एक साधारण गांव रह गया। यहां से महमूद ने फीरोज़ाबाद के चन्दवर किले पर आक्रमण किया था। पर महमूद की विजय स्थायी न थी। २०० वर्ष तक राजपूत सरदार आगरा ज़िले के मेवातियों पर राज्य करते रहे।

११९३ ई० में दिल्ली के चौहानों की शक्ति नष्ट

हो गई। मुसलमानी सेनायें दिल्ली और कोशी में आ डटीं। दूसरे वर्ष कन्नौज के राजा जयचन्द पर चढ़ाई करने से पहले फीरोज़ाबाद तहसील पर अधिकार करने के बाद हुमायूँ को लोदी का खज़ाना छीनने के लिये आगरे को भेजा। हुमायूं आगरे के बाहरी भाग में ठहरा दूसरे दिन उसने किले को घेर लिया। इस समय ग्वालियर के विक्रमाजीत के अनुयायी आगरे के किले में थे। सफलता की आशा न देखकर उन्होंने आगरे का किला हुमायूं को सौंप दिया। इसके बाद बाबर ने इब्राहीम के महल में निवास किया और इब्राहीम की मां को आगरे से २ मील नीचे की ओर भेज दिया। पड़ोस में अशान्ति थी। बाबर को रसद मिलने में कठिनाई पड़ती थी। लेकिन दूसरे वर्ष ग्वालियर ने आत्म समर्पण कर दिया। फतेहपुर सीकरी से १० मील की दूरी पर कनवा की लड़ाई में हिन्दुओं की भारी हार हुई। इस विजय के बाद बाबर द्वाब में पूर्व की ओर बढ़ा। १५३० में वह आगरे को फिर लौट आया। यहीं चार बाग में उसकी मृत्यु हो गई। लेकिन उसकी लाश काबुल को भेज दी गई। वहीं उसकी कब्र बनी।

बाबर के मरने के ३ दिन बाद उसका बेटा हुमायूं आगरे के महल में गद्दी पर बैठा।

हुमायूं ने दिल्ली की अपेक्षा आगरे में अधिक समय बिताया। उसने आगरे को ही अपनी राजधानी बनाया। हुमायूं ने १६३१ में कालिंजर पर चढ़ाई की। दूसरे वर्ष उसने जौनपुर के अफगानों पर हमला किया। १५३३ में वह भोजपुर की ओर बढ़ा उसकी अनुपस्थिति में गुजरात के बहादुरशाह ने तातार खां लोदी को बियना पर चढ़ाई करने के लिये भेजा। तातार खां ने बियना जीतकर आगरे पर चढ़ाई की यहाँ वह हार गया। १५३४ में बहादुर शाह को भगाकर हुमायूं आगरे को लौट आया। विद्रोह का समाचार सुनकर हुमायूं फिर जौनपुर की ओर बढ़ा। इधर आगरे में उसके भाई हिन्दाल ने विद्रोह का झंडा उठाया। १५३६ में गंगा के किनारे चौसा की लड़ाई में शेरखां ने हुमायूं को बुरी तरह से हराया। हुमायूं बड़ी कठिनाई से आगरे को लौट पाया। दूसरे वर्ष हुमायूं की और भी भारी हार हुई। वह दिल्ली और लाहौर को

ओर भागा। आगरे पर शेरशाह का (जो अब राजा बन गया था) अधिकार होगया।

१५४२ ई० में शेरशाह को ग्वालियर, मांडू, रणथंभीर, मालवा, मुल्तान और अजमेर में लगातार लड़ाइयां लड़नी पड़ीं। १५४४ में वह कालिंजर की ओर बढ़ा। दूसरे वर्ष यहीं वह मारा गया। अपने पिता की मृत्यु का हाल सुनकर उसका दूसरा लड़का इस्लामशाह आगरे में सिंहासन पर बैठा। पर जब उसने अपने बड़े भाई आदिलशाह को पकड़वाने की कोशिश की तब गृहकलह फैल गई। इसमें इस्लामशाह की विजय हुई। उसने दिल्ली के पास सलीमगढ़ बसाया। १५५२ ईस्वी में ग्वालियर में उसकी मृत्यु हो गई। उसके मरते ही फिर गड़बड़ी मच गई। उसका १२ वर्ष का बेटा फीरोज़ खां राज्य को न सँभाल सका। उसके मामा मुहम्मद आदिलशाह ने गद्दी छीन ली। लेकिन जब वह पूर्व को ओर गया तो उसके भाई और बहनोई इब्राहीम खां सूरी ने दिल्ली और आगरे में अपना अधिकार जमा लिया। इसी बीच में हुमायूं ने काबुल से हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की। मुहम्मद आदिल के

हिन्दू मन्त्री हीमू ने काल्पी के पास इब्राहीम को हराकर उसे बियना की ओर भगा दिया। इसी बीच में बंगाल में सिकन्दर खां ने विद्रोह का झंडा खड़ा किया। हीमू आगरे की ओर लौटा। इब्राहीम ने हीमू का पीछा किया। इस बार मिढाकर के पास ही हीमू की फिर विजय हुई। इसी समय १५५५ में हुमायूं की एक सेना ने आगरे पर अधिकार कर लिया। लेकिन १५५५ में हुमायूं मर गया। हीमू चुनार से आगरे की ओर बढ़ा। आगरे पर फिर अफगानों का अधिकार हो गया। लेकिन दिल्ली के पास हीमू की हार हुई और वह मार डाला गया। १५५८ ईस्वी में अकबर ने आगरे में प्रवेश कर पहले वह सुल्तानपुर गाँव में ठहरा फिर वह बादलगढ़ के किले में चला गया।

१५६० में अकबर बियना की ओर शिकार के लिये गया। इसी समय बैराम खां ने विद्रोह का झंडा उठाया। अकबर की सेना ने उसे हरा दिया और पकड़ लिया। उसकी पुरानी सेवाओं का ध्यान करके अकबर ने उसे क्षमा कर दिया। जब बैराम हज के लिये जा रहा था तो उसके एक शत्रु ने उसे रास्ते में

ही मार डाला। १५६१ में अकबर फिर राजधानी (आगरे) को लौटा। १५६५ में अकबर हाथियों का शिकार करने के लिये आगरे से धौलपुर और नरवर को गया। लौटने पर उसने किले को बनवाना आरम्भ किया। इस किले के बनने में कई वर्ष लगे। १५६६ में जौनपुर और बनारस से लौटने पर उसने नगरचैन नाम का भवन ककरहा गांव में बनवाया।

आगरे के उत्तर-पश्चिम में इसके खंडहर इस समय भी मिलते हैं। १५६८ में अकबर ने चित्तौड़ की ओर प्रस्थान किया। लौटकर १५६९ में उसने रण शमशेर किले को ले लिया। इसी वर्ष उसने फतेहपुर सीकरी की नींव डाली। दूसरे वर्ष यहीं सलीम (जहांगीर) का जन्म हुआ। इसकी स्मृति में अकबर ने यहां महल बनवाये। दूसरे वर्ष उसने शेख मुईनुद्दीन ने चिश्ती के मकबरे का दर्शन करने के लिये पैदल अजमेर की यात्रा की। यहां से वह बीकानेर और लाहौर को गया। १५७१ ईस्वी में वह फिर आगरे को आया। दूसरे वर्ष वह गुजरात (अहमदाबाद) को गया और १५७४ में फतेहपुर सीकरी को लौटा। १५७५ में वह

बंगाल को गया। १५७७ में फतेहपुर सीकरी में टकसाल स्थापित की गई। १५८२ में वह पंजाब गया। १५८४ में यमुना के मार्ग से वह इलाहाबाद पहुंचा। १५८६ में उसने पंजाब और काबुल के लिये प्रस्थान किया। १५६६ में वह फिर आगरे में रहने लगा। इसके बाद वह बुर्हानपुर और अहमद नगर को गया। १६०२ ई० में वह फिर आगरा लौट आया। १६०५ ई० में ६५ वर्ष की अवस्था में अकबर का देहान्त हो गया। सिकन्दरा में उसकी लाश गाड़ी गई वहीं उसका मकबरा बना।

अकबर के जीवन काल में पुर्चगाली, यूनानी अँग्रेज़ और दूसरे योरुपीय लोग आगरे में आने लग गये थे। अकबर की मृत्यु के बाद १६०५ के अक्तूबर मास में जहांगीर गद्दी पर बैठा। जहांगीर ने पहले अपने सौतेले भाई खुसरू का पीछा किया जो मानसिंह की सहायता से राजा बनना चाहता था। खुसरू हार गया और १६०७ में बन्दी बनाकर आगरे लाया गया। १६११ में उसने नूरजहां से ब्याह किया। १६१३ से १६१८ तक वह अजमेर की ओर रहा। १६१६ में वह काश्मीर को गया। १६२२ ई० में उसके बेटे खुर्रम (शाहजहां) ने

विद्रोह का झंडा उठाया। १६२५ में खुर्रम ने आत्म-समर्पण किया और १६२८ में जहांगीर फिर आगरे को लौट आया। ईस्ट इंडिया कम्पिनी ने अपने एजेंट जहांगीर के दरबार (आगरे) में भेजे।

१६२८ के फर्वरी मास में शाहजहां बादशाह बना। आरम्भ का समय ओरछा और दक्षिण में विद्रोह दबाने में बीता। १६३१ में वह आगरे को लौटा। बुर्हानपुर में उसकी स्त्री अर्जुमन्द बानू (मुमताज महल) का देहान्त हो गया। ६ महीने बाद उसकी अस्थि आगरे लाई गई और उनके ऊपर जगत्प्रसिद्ध ताजमहल बना।

१६५७ में शाहजहां दिल्ली में बीमार पड़ा। दारा-शिकोह राजधानी में था वह राजप्रबन्ध करने लगा। उसके भाई शुजा बंगाल में, मुराद गुजरात में और औरंगजेब बीजापुर (दक्षिण) में थे। दारा खजाने पर अधिकार प्राप्त करने के लिये अपने पिता को आगरे ले आया। उसके बाद उसने राजा जैसिंह को शुजा के विरुद्ध भेजा जो इस समय बनारस में पड़ाव डाले हुये था। महाराजा जसवन्त सिंह मुराद और औरंगजेब से लड़ने के लिये भेजे गये। मालवा में औरंगजेब और

मुराद की सेनायें मिल गई थीं। दारा शिकोह किले के ठीक उत्तर की ओर जमुना पार रहने लगा। बनारस में शुजा बुरी तरह से हारा। उसके अनुयायी बन्दी बनाकर आगरे में लाये गये। वहां वे सड़कों पर घुमाये गये। लेकिन जसवन्तसिंह को सफलता न मिली। दक्षिण की सेनाओं ने उसकी सेना को भगा दिया। औरंगजेब उत्तर की ओर ग्वालियर की ओर आया। आगे बढ़कर उसने चम्बल को पार किया। आगरे से पांच मील पूर्व यमुना के किनारे रामगढ़ शाही सेना और औरंगजेब की सेना में लड़ाई हुई। दारा की सेना मुराद और औरंग-जेब की संयुक्त सेना से कहीं अधिक बड़ी थी। दारा को अपनी विजय पर पूरा भरोसा था। शाहजहां ने बंगाल से लौटने वाली विजयी सेना के आने तक ठहरने की सम्मति दी। लेकिन दारा ने इस पर कोई ध्यान न दिया। आरम्भ में दारा विजयी होता दिखाई दिया। राजा रामसिंह के राजपूत सिपाहियों ने मुराद की सेना में भीषण मारकाट मचा दी।

औरंगजेब को रुस्तम खां के सिपाहियों ने बुरी तरह घेर लिया। औरंगजेब को इस ओर समय से कुछ नये

सिपाहियों ने सहायता दी। इतने में दारा ने मध्य भाग पर आक्रमण किया और राजा रूपसिंह के सिपाहियों ने औरंगजेब की सेना को चीर कर पार कर दिया। लेकिन दारा के सिपाही पिछड़ गये। इतने में दारा का हाथी बिगड़ गया। जब हाथी वश में न आया तब दारा हाथी से उतर कर घोड़े पर सवार हुआ। इससे दारा के सिपाही उसे न देखकर हताश हो गये और उनमें गड़बड़ी मच गई। दारा और उसका बेटा आगरे की ओर भाग आये और उसी रात को लाहौर की ओर चले गये। तीन दिन के बाद औरंगजेब आगरे की ओर बढ़ा। वह मुबारक मंजिल में ठहरा। किले का प्रबन्ध शायस्ता खां को सौंपकर औरंगजेब ने मुराद के साथ दारा का पीछा किया और मथुरा में उसे पकड़ लिया। उसे कैद करके दिल्ली को भेज दिया। यहीं यह मार डाला गया।

औरंगजेब आलमगीर के नाम से बादशाह घोषित किया गया। शाहजहां कैद में रक्खा गया। १६६६ में कैद में ही वह मर गया। ताज़ में उसकी भी कब्र बनी। इसी वर्ष शिवा जी आगरे आये और बंद कर लिये गये।

अन्त में भेष बदल कर पहले वे मथुरा को और फिर काशी होकर दक्षिण को चले गये। इसके बाद औरंगजेब का अधिकतर समय दक्षिण में बीता। १७०७ में औरंग-जेब की मृत्यु हो गई। सिंहासन के लिये फिर गृहकलह छिड़ गई। औरंगजेब के बड़े बेटे मुअज्जम ने आगरा और खजाना छीन लिया। दूसरा बेटा आज़म दक्षिण की ओर से बढ़ रहा था। उसने उतांगन को पार किया लेकिन खैरागढ़ के पास जजऊ की लड़ाई में आजम हार गया और मार डाला गया। मुअज़्ज़म बहादुरशाह के नाम से सम्राट घोषित किया गया। जजऊ में बहादुरशाह ने विजय के उपलक्ष में एक मस्जिद और सराय बनवाई।

जाट और चौहान औरंगजेब के समय में ही बिगड़ गये थे। उनके नेता कोकिल को १६७० में फांसी दी गई। औरंगजेब के मरने पर बादशाह तेज़ी के साथ बदले। जाटों की शक्ति भी तेज़ी के साथ बढ़ी। १७२२ में जाटों के राजा बदनसिंह ने भरतपुर में किला बनवाया कुछ समय बाद उसने यह किला अपने बेटे सूरजमल को सौंप दिया। १७२५ में मरहठे ग्वालियर के पास आ गये। १७३४ में मरहठों के घुड़ सवार आगरे के पास

आ गये। १७३७ में बाजी राव ने बादशाह से युद्ध छेड़ दिया और आगरा जिले पर हमला किया। उसने पहले चम्बल के दक्षिण में भदावर के राजा की जायदाद छीन ली। फिर उसने बाह में प्रवेश किया। यहां से वह बटेश्वर की ओर बढ़ा। यमुना को पार करके उसने शिकोहाबाद पर अधिकार कर लिया। उसने फीरोजा-बाद और इतमादपुर को जलाया और जलेसर पर धावा बोल दिया। कुछ समय के बाद बाजी राव फतेहपुर सीकरी और डीग के मार्ग से दिल्ली की ओर बढ़ा। मरहठों को रोकने के लिये १७३६ में निजामुल मुल्क आगरे और मालवा का सूबेदार बनाया गया। १७३८ में जाटों ने फराह और कचनेरा के पास २३ गाँव छीन लिये। १७३६ में नादिरशाह के हमले से गड़बड़ी और अधिक बढ़ गई। जाटों और मरहठों की शक्ति बढ़ गई। १७४८ में मुहम्मद शाह की मृत्यु हो गई। इसके बाद उसका कोई उत्तराधिकारी आगरे में रहने के लिये न आया। १७५७ में अहमद शाह दुर्रानी ने मथुरा को लूटा और आगरे की ओर बढ़ा लेकिन उसने किले को नहीं लिया। १७५८ में मरहठे आगरे और दिल्ली के

पड़ोस में पहुंच गये। पानीपत की हार के बाद जब मराहठा सूबेदार खजाने को लेकर आगरे को भागा तब सूरजमल ने यह खजाना छीन लिया और किले बन्दी पर खर्च किया। आगे चलकर सूरजमल ने आगरे का किला ले लिया और जिले के बड़े भाग पर राज्य जमा लिया। १७६५ में उसने भदौरिया राजा से बाह भी छीन लिया। रुहेलों से तंग आकर दिल्ली के सम्राट ने मरहठों से सहायता मांगी। १७८४ में महादा जी सिन्धिया ने आगरे के किले पर अपना अधिकार कर लिया। सिन्धिया ने दिल्ली में भी अपना प्रभाव बढ़ा लिया। गुलाम कादिर ने बादशाह की आँखें निकलवा लीं। सिन्धिया ने बदले में उसके नाक, कान और जीभ कटवा कर उसे फांसी दी। १७१४ में महादा जी की मृत्यु के बाद उसका बेटा दौलतराव गद्दी पर बैठा। १८०२ ई० में ईस्ट इंडिया कम्पिनी और मरहठों में लड़ाई छिड़ गई। लार्ड लेक कानपुर से एक बड़ी सेना लेकर कन्नौज और मैनपुरी के मार्ग से आगरे की ओर बढ़ा आगरे की रक्षा का भार सिन्ध के फ्रांसीसी सेनापतियों के हाथ में था। एक फ्रांसीसी सेनापति (पेटन)

सिन्धिया को छोड़कर अँग्रेज़ों से मिल गया। इस विश्वासघात से चिढ़कर मरहठों ने दूसरे योरुपीय सेनापतियों को कैद कर लिया। लेकिन जल्दी में वे आगरे की रक्षा का ठीक प्रबन्ध न कर सके। मरहठे अन्त तक वीरता से लड़े। लेकिन वे किले को न बचा सके। मरहठों का २२ लाख रुपये का कोष पेटन ने अपने लिये लेना चाहा। लेकिन वह ईस्ट इंडिया कम्पिनी को मिला। १८०३ की सन्धि से आगरा ज़िला अँग्रेज़ी कम्पिनी के हाथ आया।

१८०४ में होल्कर से लड़ाई छिड़ गई। मरहठों ने कर्नल मानसून को बुरी तरह से हराया। उसकी फौज में भगदड़ मच गई। उसे आगरा बड़ी कठिनाई से मिला। होल्कर ने अँग्रेज़ी फौज से मथुरा खाली करवा लिया। मरहठे घुड़सवार पिन्हाट तक द्वाब में छापा मारने लगे। लेकिन लार्ड लेक ने फिर एक बड़ी सेना इकट्ठी की। फर्रुखाबाद के पास जब मरहठों के पास केवल दो दिन का भोजन रह गया था। लार्ड लेक ने होल्कर की भारी हार हुई। वह मैनपुरी, एटा, हाथरस और मथुरा के मार्ग से आगरे की ओर आया और पञ्जाब को चला आया। उस समय से गदर तक आगरा जिले में शान्ति रही।

है। कुछ मुहल्ले पश्चिमी को ओर अलग अलग बसे हैं। आगरा शहर के अधिकांश घर पत्थर के बने हैं। लेकिन गलियां तंग ऊँची नीची और टेढ़ी हैं। पुराने समय में आगरा शहर एक चार दीवारी से घिरा हुआ था। इसमें प्रवेश करने के लिये १६ द्वार थे। कहते हैं चार दीवारी के भीतर आगरा शहर का क्षेत्रफल ११ वर्ग मील था।

सिविल लाइन छावनी के दक्षिण में आरम्भ होती है। सिविल लाइन में ही आगरा कालेज होस्टल मेडिकल कालेज और अस्पताल हैं। यहीं नागरी प्रचारिणी सभा आगरा पुस्तकालय और वाचनालय है। तहसील की इमारत में पहले टक्साल थी जो १८२४ ईस्वी में तोड़ दी गई। कुछ दूरी पर आगरे के आर्किबशप का बंगला और पादरी टोला है।

आगरा शहर २१२ मुहल्लों में बटा हुआ है। छंगा मोदी दरवाज़े के पश्चिम में जहां इस समय महाराजा जैपुर की कोठी है वहां पहले प्रान्त के लाट साहब (लेफ़्टेनेंट गवर्नर) रहते थे। आलमगञ्ज मुहल्ले में औरंगजेब की बनवाई हुई मस्जिद थी। इसे उसने १६७१

ई० में बनवाया था। बाद को यह इमारत फिर से बनी और एक दफ़्तर के काम आने लगी। लोहा मंडी लोहे के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। यहीं थाना और मस्जिद मुखन्निसान (हिजड़ा की मस्जिद) है। कहते हैं लाल पत्थर की यह मस्जिद सम्राट अकबर ने एक हिजड़े की स्मृति में बनवाई थी जिसकी प्रार्थना से एक बार अकाल के समय वर्षा हुई थी।

नाई की मन्डी के दक्षिण में दरबार शाह जी का मुहल्ला है। यहां एक दरगाह और मस्जिद है। कहते हैं। एक बार शेरशाह ने अपने ऊँट मस्जिद में बँधवाये थे। इससे रुष्ट होकर फकीर ने श्राप दिया। इससे मस्जिद पड़ोस की भूमि से कुछ नीचे धँस गई।

शहर के दक्षिण में छावनी है। इसकी दक्षिणी सीमा ढाई मील लम्बी है। पश्चिमी सीमा लगभग ४ मील लम्बी है। कम्पिनी बाग के पड़ोस में ग्वालियर महाराज का भवन है। ऐसबाग या इशरत बाग में पहले दाराशिकोह का निवास था। इस समय यहां फौजी अफसरों का भोजनालय है। कुछ दक्षिण की ओर दारा के लड़के सुलेमान शिकोह की हवेली है। पास ही रंग

महल है जिस पर इस समय अल्वर राज्य का अधिकार है। छावनी की उत्तरी सीमा के पास रेलवे लाइन के आगे जामे मस्जिद है। यह किला के उत्तरी-पश्चिमी कोने के सामने है। इसे शाहजहां की लड़की जहांआरा ने बनवाया था। शाहजहाँ के कैद के समय में यह अपने पिता की सेवा करती थी। १६४४ में इसका बनना आरम्भ हुआ। यह पांच वर्ष में ५ लाख रुपये की लागत से बन कर तयार हुई। यह लाल पत्थर की बनी है। इसका फर्श पड़ोस की भूमि से ११ फुट ऊंचा है. ऊपर चढ़ने के लिये सीढ़ियां बनी हैं। इसका सदर दरवाजा बड़ा सुन्दर था। लेकिन गदर के समय यह उड़ा दिया गया। अगर इस ओर से किले पर हमला होता तो पूरी मस्जिद को उड़ाने के लिये नीचे बारूद भर दी गई थी। मस्जिद १३० फुट लम्बी १०० फुट चौड़ी है। इसके द्वार का महराव ४० फुट से कुछ अधिक ऊंचा है। यह मुगल गृह निर्माण कला का सुन्दर नमूना है। गदर के समय १८५८ तक यह बंद रही। फिर यह लौटा दी गई।

आगरे का किला रेलवे के दक्षिण में यमुना के

किनारे पर स्थित है। इसकी लम्बाई आध मील है। दूसरी ओर इसका घेरा डेढ़ मील है। अकबर के आदेश से १५५७ में इसका बनना आरम्भ हुआ। इसको पूरा होने में ८ वर्ष लगे। इससे पहले इसी स्थान पर बादल-गढ़ का पुराना किला था। चारों ओर से लाल पत्थर की दुहरी दीवार से घिरा है। बाहरी दीवार ४० फुट ऊंची है। भीतरी दीवार ३० फुट और अधिक ऊंची उठी हुई है। पूर्व (यमुना के किनारे) की ओर बाहरी दीवार कुछ कम ऊंची है। इसकी मज़बूती के लिये पत्थरों का पुश्टाना लगा है। दीवारों पर थोड़ी थोड़ी दूर पर बुर्ज बने हैं। इसकी बाहरी खाई लुप्त हो गई। भीतरी खाई ३० फुट चौड़ी है। इसमें भीतर जाने के लिये ३ दरवाज़े हैं। उत्तर-पश्चिम की ओर दिल्ली दरवाज़ा है। दक्षिणी कोने पर अमर-सिंह (सरदार अमरसिंह शाहजहां के समय में मरवा डाला गया था) दरवाज़ा है। तीसरा दरवाज़ा यमुना की ओर है। दिल्ली दरवाज़े के पास ही किले के भीतर मोती मस्जिद है। उत्तरी कोने पर बारूद खाना है जहां सर्व साधारण को जाने को आज्ञा नहीं है। मोती

आगरा-दर्शन

११ मई १८५७ को गदर की खबर मथुरा और आगरा में पहुँची। इस समय किले में अधिकतर हिन्दुस्तानी सिपाही थे। १३ मई को और योरुपीय सिपाही किले में भेज दिये गये और हिन्दुस्तानी सिपाही किले से बाहर कर दिये गये। गोरे और अधगोरे (यूरेशियन) लोग भरती किये गये वे सिविल लाइन में गश्त लगाने लगे। किले की रक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया गया। कुछ सेना सिन्धिया महाराज ने भेज दी। कुछ सेना दूसरे देशी राज्यों से मंगाली गई। पुलिस के सिपाही भी बढ़ा लिये गये। ३० मई को दो छोटी देशी सेनायें मथुरा से ६ लाख रु० का खज़ाना लाने के लिये भेजी गईं। मथुरा पहुँच कर इन्होंने विद्रोह का झंडा उठाया और खज़ाना लेकर उन्होंने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। दूसरे दिन आगरे में परेड के मैदान में देशी सिपाहियों की ओर तोपों और अंग्रेज़ी सिपाहियों की बन्दूकों के मुंह कर दिये गये और इस प्रकार डराकर उनसे हथियार रखवा लिये गये। कुछ निहत्थे सिपाही अपने अपने घर चले गये। कुछ दिल्ली पहुँच कर दूसरे विद्रोहियों से जा मिले। इससे पड़ोस में विद्रोह

की आग भड़क उठी ३ जून को कानपुर से खबर का जाना बन्द हो गया। इसीदिन नीमच के सिपाही बिगड़ गये। ३ जून को नीमच में ६ जून को झाँसी में १० जून को नौगाँव में १४ जून को ग्वालियर में और १ जुलाई को इन्दौर में विद्रोह हुआ। पीड़ित योरूपीय जान लेकर आगरे में आने लगे। १२ जून को आगरा शहर और जिले में मार्शल्ला (फौजी कानून) घोषित किया गया। २ जुलाई को नीमच के सिपाहियों ने फतेहपुर सीकरी पर अधिकार कर लिया। २७ जून को सिविल लाइन खाली करके सभी योरुपीय किले में चले आये। लेफ्टीनेंट गवर्नर भी किले में आ गया। जेल के योरुपीय सिपाहियों का पहरा देने का काम ७० सिक्ख कैदियों को सौंपा गया। वे मुक्त कर दिये गये और सिपाही बना दिये गये। नावों का पुल तोड़ दिया गया। नावें किले के पास लाई गईं। कोटा के सिपाहियों ने जब विद्रोह किया तो उनके ऊंट और बन्दूकें छीन ली गई। लेकिन शाहगंज की लड़ाई में विद्रोहियों की भारी जीत हुई। इससे किले में डर फैल गया। वहां ३५०० गोरे और २३ देशी ईसाई थे। विद्रोही आगरे

से दिल्ली चले गये थे। फिर भी ३ दिन तक किसी ने किले से बाहर आने का साहस न किया। धीरे धीरे धौलपुर और दूसरे स्थानों से सहायता आ गई। इस से शहर और जिले में थाने स्थापित किये गये। सेना की दो टोलियों ने गश्त लगाये। इससे कुछ समय में ज़िले में शान्ति स्थापित हो गई। १८५८ में लेफ़्टनेन्ट गवर्नर के रहने का स्थान आगरे से हट कर इलाहाबाद में हो गया। १८६८ में हाईकोर्ट भी इलाहाबाद चला आया।

अचनेरा कस्बा आगरे से भरतपुर को जानेवाली पक्की सड़क पर आगरे से १७ मील दूर है। यहां से बाम्बे बड़ौद सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे की शाखा लाइन कानपुर को और प्रधान लाइन अजमेर को जाती है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाज़ार लगता है। वहाँ चैत में देवी का मेला लगता है। कन्सलीला और फूल के उत्सव होते हैं। कहते हैं दिल्ली के राजा अनंगपाल के बेटे अचल राजा ने इसे बसाया था।

आगरा शहर यमुना के दाहिने किनारे पर रेल द्वारा कलकत्ते से ८४३ मील और बम्बई से ८३६ मील

दूर है। यहाँ से उत्तर में अलीगढ़, पूर्व में फीरोज़ाबाद, मैनपुरी, दक्षिण में धौलपुर-ग्वालियर दक्षिण-पश्चिम में भरतपुर, पश्चिम में मथुरा को पक्की सड़कें गई हैं। ईस्ट इंडियन रेलवे की शाखा लाइन टूंडला से आती है और यमुना पुल के पास फोर्ट स्टेशन में समाप्त हो जाती है। यहां से मीटर गेज लाइन पश्चिम की ओर छावनी स्टेशन होती हुई अचनेरा को जाती है। जी० आई० पी० की लाइन इसके समानान्तर चलती है और दक्षिण की ओर धौलपुर को जाती है। छावनी स्टेशन से उत्तर की ओर ख़वासपुर या आगरा रोड जंक्शन से राजा की मंडी होती हुई सिकन्दरा और मथुरा को जाती है। यमुना के ऊपर जो पुल है उसके ऊपरी भाग पर रेल जाती है। नीचे से सड़क जाती है। आगरा शहर का बड़ा भाग यमुना के दाहिने किनारे पर किले से ऊपर की ओर स्थित है। दक्षिण ओर छावनी है। कुछ भाग (गुड्स) स्टेशन के पास यमुना के दूसरे किनारे पर बसा है। अधिक आगे पूर्व की ओर जगत प्रसिद्ध ताज-महल है। छावनी के उत्तर-पश्चिम में सिविल लाइन है। प्रधान शहर यमुना और सिविल लाइन के बीच में स्थित

मस्जिद को शाहजहां ने ३ लाख के खर्च से (१६४८-१६५५) में बनवाया था। इसमें संगमरमर का काम है और बड़ी सुन्दर है। मोती मस्जिद से पश्चिम की ओर महल है। पास ही मीना बाज़ार है जहां ऊंचे घराने की स्त्रियां अपना अपना सामान अकबर और उसकी रानियों के हाथ बेचती थीं! अधिक दक्षिण की ओर दीवानखास है। यह ५०० फुट लम्बा और ३७० फुट चौड़ा है। इसमें दरबारी लोगों की ही पहुँच होती थी पूर्व की ओर दीवान-आम है। यह तीन ओर से खुला हुआ है। फर्श और छत लाल बलुआ पत्थर की बनी है। संगमरमर के बने हुये सफेद खम्भों की तीन पंक्तियों पर सधी हुई है। सिंहासन के सामने सफेद संगमरमर की बड़ी चौकी है। सिंहासन के दाहिने और बायें ओर पत्थर को जाली वाली खिड़किया हैं जहां से महल की स्त्रियां सभा को देख सकती थीं। पास ही अकेले पत्थर की गढ़ी हुई २५ फुट घेर वाली ५ फुट ऊंची नाद है जिसमें जहांगीर स्नान करता था। इसके एक ओर नगीना मस्जिद है। पूर्व की ओर मच्छी भवन है। इसके बीच वाले छोटे ताल में मछलियां

रहती थीं। मच्छी भवन के दक्षिण में अंगूरी बाग है। पूर्व की ओर खास महल या आरामगाह है।

अंगूरी बाग के उत्तरी पूर्वी किनारे पर शीशमहल है। इसमें छोटे छोटे शीशे लगे हैं। समन बुर्ज में शाहजहां ने कैद के दिन बिताये थे शीशमहल और समन बुर्ज के बीच में हम्माम या स्नानागार है। १८१३-१८२० में लार्ड हेस्टिंग्स ने सर्वोत्तम स्नानागार को उखड़वाकर इंगलैंड भिजवा दिया। इस लूट से इस स्थान की सुन्दरता सदा के लिये नष्ट हो गई। लार्ड विलियम बैंटिंग ने (१८२८-३५) बहुत सा बढ़िया कामदार संगमरमर पत्थर नीलाम कर दिया। एक ओर सोमनाथ के फाटक रक्खे हुये हैं यह १२ फुट ऊंचे ९ फुट चौड़े हैं। इन पर बढ़िया काम है। यह देवदारू के बने हैं। १८४२ में यह महमूद गजनवी के मकबरे से लाये गये। महमूद जो सोमनाथ के फाटक ले गया था वे चन्दन के बने थे। नीचे बावली और कुछ तहखाने हैं। एक बरामदे में हिन्दू मन्दिर है। जिसे भरतपुर के राजा ने अठारहवीं सदी में अपने दस वर्ष के शाशनकाल में बनवाया था।

अंगूरी बाग के दक्षिण में जहांगीर महल है। यह (पूर्व-पश्चिम) २६० फुट लम्बा और (उत्तर-दक्षिण) २४९ फुट चौड़ा है। यह और महलों से पुराना है और हिन्दू ढङ्ग से बना है। कहते हैं जोधाबाई यहीं रहती थीं। इसमें एक छोटा मन्दिर भी था जिसे असहिष्णु औरंगजेब ने उखड़वा डाला।

ताजमहल या ताज बीबी का रौज़ा यमुना के दाहिने किनारे पर किले से डेढ़ मील की दूरी पर बना है। यहीं शाहजहां की स्त्री अर्जुमन्दबानू या मुमताज महल की कब्र है। उसका बाप नूरजहां का भाई था। इसके बनवाने में ५ करोड़ रुपये खर्च हुये। संगमरमर मकराना (जैपुर) से लाया गया। हीरा जवाहिरात और सजावट का दूसरा सामान संसार के सभी भागों से आया। ताजमहल का चबूतरा ३१३ फुट वर्ग है और संगमरमर का बना है। चार कोनों पर संगमरमर की १६२½ फुट ऊँची मीनारें बनी हैं। बीच में १८६ फुट लम्बा चौड़ा मकबरा है। बीच में चारों ओर ६२½ फुट ऊंचे महराब हैं। प्रधान गुम्बद का व्यास ५८ फुट है। इसकी चोटी फ़र्श से २१३½ फुट ऊंची है। इसके

ऊपर सुनहली कलंगी ३० फुट ऊंची है। नीचे अष्ट भुज कमरा है। नीचे कब्रों के ऊपर बढ़िया काम है। पहले इसके दरवाज़े चांदी के बने थे। कहते हैं भरतपुर के जाट इन्हें उठा ले गये। अपनी सुन्दरता और कारीगरी के लिये ताजमहल संसार के सात महान आश्चर्यों में से एक है।

ताज के दक्षिण में ताजगञ्ज मुहल्ला है। यहां कुछ मकबरे, महावत खां का बाग और भरतपुर महाराज की कोठी है।

शहर के पास छावनी की पश्चिमीसरहद् से मिली हुई ईदगाह है। कहते हैं शाहजहां ने इसे ४० दिन में पूरा करवाया। यह १६० फुट लम्बी और ४० फुट चौड़ी है।

अधिक पूर्व की ओर यमुना के किनारे राजबाड़ा है। यहां मुगल दरबार में सम्मिलित होने वाले राजपूत सरदार रहते थे यहीं राजा जस्वन्त सिंह की छतरी है। १६७७ ईस्वी में काबुल में उसकी मृत्यु हुई थी। यह लाल पत्थर का एक वर्गाकार भवन है और चारदीवारी से घिरे हुये बगीचे के बीच में स्थित है। आगरा बहुत

समय तक मुग़ल राजाओं की राजधानी रहा। यहां राज दरबार से सहायता मिलने के कारण तरह तरह की दस्तकारियां फली फूलीं। पर पांच बातों में आगरा इतना प्रसिद्ध हुआ कि उनके बारे में एक कहावत चल पड़ी। वह कहावत यह है:—

दर, दरी, दरिया, दरियाई, दालदेव।

यहां के दर यानी दरवाज़े या मकान, दरी दरिया या नदी, दरियाई एक प्रकार का रेशम और दाल देव सब कहीं प्रसिद्ध हो गये। आगरे में पत्थर का काम भी प्रसिद्ध है। संगमरमर के बने हुये ताजमहल के नमूने, खिलौने और कलैंडर दूर दूर तक जाते हैं। यहां गोटा भी अच्छा बनता है। कुछ लोग टोपी बनाते हैं।

इस समय आगरे में चमड़े का काम बहुत उन्नत कर गया है। चमड़े के काम के लिये कानपुर के बाद दूसरा स्थान आगरे का ही है। दयाल बाग में राधा स्वामी उपनिवेश में जूते, फाउनटेन आदि कई प्रकार की चीज़ें वैज्ञानिक ढंग से बनती है।

आगरा इस प्रान्त में शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र है। यहां विश्वविद्यालय है जिसके सम्बन्ध में आगरा

कालेज में इन्टर तक पढ़ाई होती है। यहीं ट्रेनिंग कालेज सेन्टजान्स कालेज गवर्नमेंट कालेज में बी० ए० और एम० ए० परीक्षा तक शिक्षा होती है। राजपूत कालेज गवर्नमेंट कालेज और राधा स्वामी कालेज में इण्टर तक पढ़ाई होती है। यहीं ट्रेनिंग कालेज, नार्मल स्कूल और मेडिकल कालेज हैं। हाई स्कूल कई हैं। पागलों के सुधार के लिये भी एक अस्पताल है।

अहरान गाँव आगरे से ३१ मील उत्तर-पूर्व को ओर है। यहां थाना डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और संस्कृत पाठशाला है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। अकोलागांव खारी नदी के उत्तरी किनारे पर आगरे से १२ मील दूर है। मरहठों के शासन काल में यह गांव एक जोशो (ब्राह्मण) को माफी में मिला था। यहां मिट्टी के बर्तन बहुत बनते हैं। बाज़ार भी लगता है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

बाह इसी नाम को तहसील का केन्द्र स्थान है। यह आगरे से इटावे को जानेवाली पक्की सड़क पर आगरे से ४५ मील और बटेश्वर से ६ मील दूर है। यहां से यमुना तट के विक्रमपुर घाट और चम्बल तट

के कैंजरा घाट को सड़कें गई हैं। कहते हैं भदावा के राजा कल्याण सिंह ने इसे सत्रहवीं सदी में बसाया था। राजा बख्तसिंह ने १७५८ में यहां महादेव का एक मन्दिर बनवाया जो अब तक खड़ा है। १७६८ में इसे जाटों ने छीन लिया। १७८४ में यहां मरहठों का अधिकार हो गया। बाह की चारदीवारी में ४ दरवाज़े हैं।

नगर के बीच में सोमवार और बृहस्पतिवार को बाज़ार लगता है। यहां से ग्वालियर और सिरसागंज (मैनपुरी) को माल जाता है। यहाँ तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। यहां क्वार में राम-लीला और चैत में बल्देवजी का मेला होता है।

बारहान गांव आगरे से २२ मील उत्तर-पूर्व की ओर और इतिमादपुर तहसील से १२ मील उत्तर की ओर है। पास ही ईस्टइंडियन रेलवे का स्टेशन है। यहां डाकखाना प्राइमरी स्कूल और बाजार है। तम्बाकू की बिक्री बहुत होती है। कहते हैं इसके पड़ोस में ढाकरा राजपूतों के हाथ में १२ गांव थे।

इसी से इस गांव का यह नाम पड़ा। गदर से

कुछ पहले यह अवा के राजा के अधिकार में चला गया। यहां भट्टी मुसलमानों के बनवाये हुये किले के खंडहर हैं।

बटेश्वर का प्राचीन गांव यमुना के दाहिने किनारे पर आगरे से ४१ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यह बाह से ६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यहाँ से एक सड़क यमुना को पार करके शिकोहाबाद को गई है। यहाँ पुराने खेर में पुराने समय की ईंटें सिक्के और दूसरी चीज़ें मिलती हैं। १६४६ ई० में भदावर के राजा बदनसिंह ने यहाँ बटेश्वरनाथ (महादेव) का मन्दिर बनवाया। यमुना के किनारे और भी कई मन्दिर बन गये। पड़ोस में राजा के किले और महल के खंडहर हैं। यहां कार्तिकी पूर्णिमा को बड़ा मेला लगता है। यह तीन सप्ताह तक रहता है। यहां पशु घोड़े ऊँट आदि और दूसरी चीजें दूर दूर से बिकने आती हैं।

चन्दवर का प्राचीन गांव यमुना के किनारे पर फिरोज़ाबाद से तीन मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यमुना के ऊँचे किनारे पर चौहानों का किला था। इसने कई बार दिल्ली के बादशाहों से लोहा लिया।

इसके पड़ोस में मीलों तक मन्दिर आदि के खंडहर हैं। गांव से उत्तर को ओर अकबर के समकालीन शाहसूफी नाम का एक फकीर का मकबरा है। यहां वर्ष में एक बार मेला लगता है।

धीरपुरा इतमादपुर तहसील के उत्तर-पूर्वी कोने टूंडला स्टेशन से ६ मील दूर है। दक्षिण मे यह यमुना तक फैला हुआ है। इसके पूर्व में भिना नाला है। यमुना में गिरने वाले छोटे छोटे नालों ने गांव को कई भागों में बांट दिया है। कहते हैं धीरसिंह नामी एक चौहान राजपूत ने इसे बसाया था। विद्रोह में भाग लेने के कारण यह गांव १८५८ में जब्त कर लिया गया था। गांव की प्रधान उपज तम्बाकू है। चैत के महीने में यहां दंगल होता है। पड़ोस से यहां लगभग १०,००० दर्शक इकट्ठे होते हैं।

दूरा गांव किरावली तहसील के दक्षिण में फतेहपुर सीकरी से ५ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। गांव में बाजार लगता है। चैत के महीने में फूल डोल का मेला होता है। यहां के जाट भरतपुर राजवंश के सम्बन्धी हैं। गांव में होकर फतेहपुर सीकरी-नहर का पुराना राजवाहा जाता है।

फतेहाबाद इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यहां होकर आगरे से इटावे को पक्की सड़क जाती है। एक सड़क पश्चिम की ओर शम्साबाद को और दूसरी सड़क फीरोजाबाद को जाती है। १६५८ में दारा-शिकोह पर विजय पाने के बाद औरंगजेब ने इसका नाम जफराबाद से बदल कर फतेहाबाद रख दिया। यहां उसने एक मस्जिद और सराय बनवाई। इसके दक्षिण की ओर फीलखाना (हाथियों के आराम के लिये बाग) और ताल बनवाया। मरहठा सरदार रावहुंडे ने यहां किलाबन्दी की। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, मिडिल स्कूल और फारसी का मक्तब है। अनाज की बिक्री रोज होती है। रविवार को पशु बिकते हैं। सोमवार के बाज़ार में चमड़ा, जूता और दूसरा सामान बिकता है। भादों में श्री बिहारी का मेला लगता है। सम्बत १८१२ में मरहठों ने यहां बिहारी और महादेव के मन्दिर बन-वाये थे। फतेहपुर सीकरी कस्बा आगरे से २३ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। आगरे से पक्की सड़क मिढकौर और किरावली होती हुई खारी नदी को पुल द्वारा पार करके यहां आती है। कच्ची सड़क उत्तर में

भरतपुर और अचनेरा की ओर उत्तर-पूर्व में खैरागढ़ को गई है। वर्तमान फतेहपुर सीकरी .कस्बा है अकबर के महलों और पुराने खंडहरों के दक्षिण-पश्चिम में एक लाल पहाड़ी टीले के ढाल पर स्थित है। अधिकतर घर समतल भूमि पर पत्थर के बने हैं जो यहां बहुत सस्ता है। यहां थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। शनिवार को बाज़ार लगता है। यहाँ चक्की और सूती कालीनें बनती हैं।

सीकरी गांव को चौदहवीं सदी में धौलपुर से आये हुये राजपूतों ने बसाया था। १५२७ में बाबर ने यहां पड़ाव डाला। खन्हवा या कन्हवा गांव के पास (जो यहां से १० मील की दूरी पर भरतपुर राज्य में स्थित है।) बाबर ने राणासंग्रामसिंह की सेना पर विजय पाई। गुजरात में विजय पाने के बाद अकबर ने इसका नाम फतेहपुर सीकरी रक्खा। यहां शेख सलीम चिश्ती नाम का एक प्रसिद्ध मुसलमान फकीर रहता था। १५५६ में अकबर ने फकीर के दर्शन किये इस समय तक अकबर के कोई लड़का नहीं हुआ था। फकीर के आदेश से अकबर ने अपनी रानी को यहां रहने के लिये भेज दिया

दूसरे वर्ष शाहजादा सलीम (जहांगीर) पैदा हुआ। फकीर के प्रति कृतज्ञता प्रगट करने के लिये ही अकबर ने अपने पुत्र का नाम सलीम रक्खा। पुत्र के पैदा होने पर अकबर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने सलीम के जन्म स्थान पर महल बनाने और नया शहर बसाने का निश्चय कर लिया। लाहौर जाने के समय तक अकबर यहीं रहा पंजाब से लौटने पर वह आगरे में रहने लगा और फतेहपुर सीकरी का नया शहर उजड़ गया। १७२० में मुहम्मद शाह कुछ समय तक यहां रहा। यहीं जाटों और मरहठों ने अपने शासन काल में तहसील का केन्द्र बनाया था। कुछ समय तक शहर में विद्रोहियों का यहां प्रभुत्व रहा।

अकबर की फतेहपुर सीकरी में इस समय की सीकरी भी शामिल थी। इसका घेरा ६ मील था। यह तीन ओर पत्थर की ऊँची दीवारों से घिरी थी। भीतर की दीवार ६ फुट चौड़ी और ३२ फुट ऊँची थी। इससे एकदम जुड़ी हुई बाहरी दीवार ६ फुट अधिक ऊँची थी। इसमें इस प्रकार छेद बने थे कि भीतर से बाहर की ओर सिपाही गोली छोड़ सकते थे। चौथी (उत्तर-पश्चिम की) ओर अकबर की नगरी खुली हुई थी।

इधर दीवार न थी। इस ओर घाटी के आर पार बन्द-रौली और फतेहपुर सीकरी की पहाड़ियों के बीच में बांध बनवा कर एक कृतिम झील बनवाई थी। दीवारों में ६ दरवाजे थे। दिल्ली दरवाजा सीकरी और नगर गाँवों के बीच में था। लाल दरवाजे के आगे आगरा दरवाजा प्रधान सड़क पर था। बीरबल दरवाजा पूर्वी कोने पर था। दक्षिण-पूर्व की ओर चन्दनपाल और ग्वालियर दरवाजे थे। टेहरी दरवाजा दक्षिण-पश्चिम की ओर था। यहां से नसीराबाद को सड़क जाती है। चोर दरवाजा पहाड़ों की चोटी पर था। अजमेर दरवाजा पश्चिमी ढाल पर था। आगरा दरवाजा बाहर की ओर ५१ फुट और भीतर की ओर ४० फुट ऊंचा था। यह ४० फुट गहरा (मोटा) और ४० फुट चौड़ा था। छत पर जाने के लिये दोनों ओर जीने बने थे। इसी ढंग के दूसरे दरवाजे भी थे।

आगरा दरवाजे से प्रधान सड़क दक्षिण-पश्चिम की ओर पहाड़ी के किनारे किनारे जाती है। इससे दाहिनी ओर को जो सड़क फूटती है वह अकबर के महलों को गई है। एक ओर उजड़ी हुई सराय है।

इसके आगे बाजार दाहिनी ओर पहाड़ी पर बारादरी है। यहां अमीर लोग रहते थे। पास ही नौबत खाना (संगीत-गृह) है। नौबत खाने से पहाड़ी के ऊपर को सड़क जाती है। यहां महल के भवन हैं पहले टकसाल पड़ती है। अकबर के समय में सिक्के यहीं ढलते थे। इसके सामने खजाना है। इसके आगे दीवान-आम है जो ३६१ फुट लम्बा और १८१ फुट चौड़ा है। बाहर की ओर दक्षिण-पश्चिम के कोने पर विशाल हम्माम (स्नानागार) और दीवान आम के पीछे पश्चिम की ओर दीवान खास है। यह ७५६ फुट लम्बे और २७२ फुट चौड़े हाते के भीतर स्थित है। यहां पचीसी खेल खेलने के खाने बने हैं। पचीसी के आगे उत्तरी-पश्चिमी कोने पर हिन्दू योगी के रहने का कमरा है। इसके पश्चिम की ओर आंख मिचौनी और जनाना है। पचीसी के दक्षिण में खास महल है। खास महल के उत्तरी-पूर्वी कोने पर तुर्की सुल्ताना का कमरा है। बीच में एक तालाब है। तालाब में एक चबूतरा है। यहां तक पहुँचने के लिये चार मार्ग बने हैं। दक्षिण की ओर अकबर का ख्वाबगाह (शयनागार) है। यह कमरा

भिन्न-भिन्न रंगों से रंगा हुआ है। इसके दक्षिण में दफ़्तरखाना है। कुछ आगे मरियम का भवन है। अस्पताल के दक्षिण में पंच महल (पंच मंजिला महल) है। पंच महल के दक्षिण में सुनहरा मकान या मरियम का भवन है दक्षिणी-पश्चिमी भाग में जोधबाई का महल है। जो जहांगीर को ब्याही थी। एक दरवाजे से हवा महल को रास्ता गया है। इसके नीचे मरियम का बगीचा है। जोधबाई महल की पश्चिमी दीवार से मिले हुये ऊँटों के अस्तबल हैं। इनके आगे ऊँटों का अस्पताल है। अस्तबल के उत्तर में बीरबल का शानदार भवन है। बीरबल शाही कवि, हंसमुख, हाजिर जवाब और वीर सेनापति थे। वे सदा अकबर के साथ रहते थे और उन्हें प्रसन्न रखते थे। बीरबल के घर के पास ही छोटी नगीना मस्जिद थी। यहां महल की महिलायें जाती थीं। कुछ आगे जलागार था। जहाँ से महल में पानी जाता था। पास ही हाथी पाल है। जहां द्वार पर दो विशाल हाथी बने हुये हैं।

सराय के उत्तरी कोने के सामने हिरन मीनार है। यह दस फुट ऊँचे और ७२ फुट वर्ग चबूतरे पर बनी

हुई है। इस चबूतरे में एक दूसरा अष्टभुज चबूतरा है यह बड़े चबूतरे से ४ फुट ऊँचा है। इसका व्यास ३८ फुट है। इसके ऊपर ६६ फुट ऊँचा बुर्ज बना है। पहले १३ फुट की ऊँचाई तक यह अष्ट भुज है। इसके ऊपर २७३/४ फुट तक यह गोल है। इसके ऊपर यह पतला और नुकीला हो गया है। गोल भाग में इसमें नकली हाथी-दांत (थोड़ी थोड़ी दूर पर) गड़े हैं। इससे यह बड़ा विलक्षण मालूम होता है। ऊपरी भाग में जालीदार पत्थर का घेर है। चोटी तक चढ़ने के लिये भीतर से जाना होता है। कहते हैं अकबर यहीं बैठकर हिरण का शिकार किया करता था। इसी से इसका नाम हिरण मीनार पड़ा। यहीं बरामदे में बैठकर महल की स्त्रियां दङ्गल देखा करती थीं। महल के दक्षिण-पश्चिम में विशाल जामा मस्जिद और शेख़सलीम चिश्ती का मक़बरा है। जामा मस्जिद मक्का की मस्जिद के ढङ्ग पर बनी है और भारतवर्ष की सर्वोत्तम इमारतों में से एक है। खम्भे हिन्दू ढङ्ग से बने हैं। मस्जिद के दक्षिण में १३४ फुट ऊँचा बुलन्द दरवाजा है। यह ४२ फुट ऊंचे फर्श पर बना है। इसे अकबर ने दक्षिण-विजय से लौटने पर १६०१ में बन-

वाया था। यह न केवल भारतवर्ष वरन् संसार का सबसे बड़ा दरवाजा है यह मस्जिद से भी अधिक सुन्दर है। और इससे अधिक सुन्दर शेख सलीम चिश्ती का मकबरा है।

बुलन्द दरवाजे के बाहर कुछ दूरी पर पश्चिम की ओर ११ गज़ व्यास वाली बावली है।

शेखसलीम चिश्ती का मकबरा कामदार संगमरमर के चबूतरे के ऊपर बना है। यह चबूतरा १ गज़ ऊंचा और १६ गज़ लम्बा १ गज़ चौड़ा है। मकबरे के चारों ओर १२$\frac{1}{3}$ फुट ऊँचा बराम्दा है। मकबरा बढ़िया कामदार संगमरमर के घेरे से घिरा है। मकबरे के ऊपर तांबे और मोती की सीप से जड़ी हुई कामदार लकड़ी की छतरी है। ऊपर मकबरा है। नीचे कब्र है। मकबरे के फर्श पर कई रंग के संगमरमर जड़े हैं। इनमें तरह तरह के बढ़िया काम हैं। यहां दूर दूर से मुसलमान और हिन्दू यात्री प्रतिवर्ष दर्शन करने आते हैं।

मस्जिद के उत्तर-पश्चिम में फैजी अफसर का भवन है। इनके अतिरिक्त यहां कई छोटे छोटे मकबरे हैं।

फीरोजाबाद इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान

है। यह आगरे से २६ मील पूर्व की ओर प्रान्तीय सड़क पर स्थित है। यहां से एक सड़क उत्तर को ओर जलेसर को और उत्तर-पूर्व की ओर कोटला को गई है। यह ईस्टइंडियन रेलवे की प्रधान लाइन का एक स्टेशन है। आगरे के बाद जिले में दूसरा स्थान फीरोज़ाबाद का है। कहते हैं जब राजा टोडरमल गया की तीर्थ यात्रा करके लौट रहा था तब वह यहां पड़ोस वाले एक गांव में ठहरा। गांव वालों ने उसका तिरस्कार किया।

इस पर अकबर ने फीरोज़ख्वाजा नामी एक हिजड़े को आदेश दिया कि वह इस गांव को नष्ट करके दूसरा गांव बसावे। इस नये गांव का नाम हिजड़े की स्मृति में फीरोज़ाबाद रक्खा गया। उसका मक़बरा आगरे की सड़क के पास है। यहां कई पुराने मन्दिर हैं। एक पक्का ताल और पुरानी चारदीवारी से घिरा हुआ बगीचा है। मरहठों ने अपने शासनकाल में फीरोज़ाबाद को एक तहसील का केन्द्र स्थान बनाया था। यही व्यवस्था ब्रिटिश राज्य के हो जाने पर भी जारी रही। फीरोज़ाबाद क़स्बा प्रधान सड़क के दोनों ओर बसा है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना, सनातन धर्म हाई स्कूल,

मिडिल स्कूल और बाज़ार है। यहां कपास ओटने, आटा पीसने और चूड़ियां बनाने के कारखाने हैं। वर्ष भर में यहां कई मेले लगते हैं।

इरादत नगर खारी नदी के दाहिने किनारे पर फतेहाबाद से खैरागढ़ को जाने वाली सड़क पर स्थित है। जाट और मरहठा शासनकाल में यह एक तहसील का केन्द्र स्थान था। १८७६ में तहसील तोड़ कर फतेहाबाद और खैरागढ़ में मिला दी गई है। इस समय यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है।

इतिमादपुर इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यह आगरे से १३ मील की दूरी पर फीरोज़ाबाद और मैनपुरी को जानेवाली सड़क पर पड़ता है। उत्तर-पूर्व की ओर एक सड़क एटा को गई है। रेलवे स्टेशन कुछ ही दूर है। अकबर के हिजड़े इतमाद खां ने यहां एक मस्जिद और पक्का ताल बनवाया था। उसी की स्मृति में कस्बे का यह नाम पड़ा। तालाब के किनारे सात आठ सौ फुट लम्बे हैं। तालाब के बीच में एक भवन है जो २१ महराबों पर बना है। इस तालाब को बुढ़िया का तालाब कहते हैं। इसी की तली की कीचड़

में कई बुद्ध कालीन चीजें पाई गई हैं। इसे पहले बोधि-ताल कहते थे। इसी से बिगड़ कर इसका नाम बुढ़िया का तालाब पड़ा। यहां तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। बाज़ार जिले के एक कलक्टर मिस्टर हालैंड की स्मृति में हालनगंज कहलाता है। तहसील एक मोटी और ऊँची दीवार से घिरी हुई है। यहां पहले किला था। किले की खाई सूख गई है।

इतिमादुद्दौला यमुना बायें किनारे पर आगरा शहर का ही अंग है। इसके उत्तरी भाग में जहांगीर के प्रधान मन्त्री और नूरजहां के पिता इतिमादुद्दौला का मकबरा है। इसी से इसका यह नाम पड़ा। मकबरे के पास ही इतिमादपुर और अलीगढ़ से आने वाली सड़कें मिलती हैं। यहां से आधा मील की दूरी पर रेलवे का पुल है जिसके ऊपर से टूंडला को लाइन जाती है। मकबरे के अतिरिक्त यहां बुलन्द बाग (बुलन्दखां नामी जहांगीर के हिजड़े का बाग) सतकुइयां और बत्तीस खम्भा, राम बाग, ज़ुहरा बाग, (जहरा बाबर की लड़की थी) और चीनी का रौज़ा है। यहीं मोतीगाग, चहारबाग, महताब बाग, और अचानक बाग हैं।

जगनेर कस्बा आगरे से ३१ मील की दूरी पर खैरागढ़ तहसील से १५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह सड़क और कवार नाले के बीच में ग्वाल बाबा पहाड़ी की तलहटी में बसा है। इसके एक भाग में ब्राह्मण और दूसरे भाग में बनिये रहते हैं। बीच में बाज़ार है। इसके पड़ोस में एक किले के खंडहर हैं। पास ही सूरजमल ने चट्टान को काटकर ताल बनवाया था। नगर के पूर्व में उँचवा खेरे पर जाट और मरहठा शासन के समय के बने हुये घरों के खंडहर हैं।

जजऊ गांव उतांगन के बायें किनारे पर आगरे से धौलपुर को जाने वाली सड़क के पास है। यहां से खैरागढ़ (तहसील) पांच मील पश्चिम की ओर है। जजऊ के पास कई प्राचीन गढ़े हुये पत्थर मिले हैं १७०७ में यहां पर बहादुरशाह और उसके भाई आजमशाह के बीच दिल्ली के सिंहासन के लिये लड़ाई हुई थी। आजमशाह मारा गया। विजय के उपलक्ष में बहादुरशाह ने यहा नदी के पास सड़क के पश्चिम में एक बड़ी सराय बनवाई।

जरसी गांव इतमादपुर की पूर्वी सीमा पर टूंडला

स्टेशन से ४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां थाना, डाकखाना, बाजार और प्राइमरी स्कूल है। यहां जूते बहुत बनते हैं और कलकत्ते भेज दिये जाते हैं। यहां से घी भी बाहर भेजा जाता है।

कचौरा गांव यमुना के दाहिने किनारे पर नालों के बीच में बसा है। यह आगरे से ५७ मील दूर है। यहां होकर आगरे से इटावे को सड़क जाती है। यह सड़क यहीं यमुना को पार करती है। इसी से इसे घाट का गांव कहते हैं। यमुना के ऊपर पुराने किले के खंडहर हैं। इसे भदावर के राजाओं ने बनवाया था भादों में महादेवछठ का मेला होता है। कागरोल आगरे से १६ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर एक सड़क कचनेरा को जाती है। कागरोल बहुत पुराना है। वर्तमान गांव एक पुराने किले के खेरे पर बसा है। यहां पुराने समय के सिक्के और गढ़े हुये पत्थर मिलते हैं। गांव के उत्तर की ओर बारह खम्भा है। यह शेख अम्बर का लाल पत्थर का गुम्बद वाला मकबरा है। जो बारह खम्भों पर बसा हुआ है। यहाँ थाना, डाकखाना और स्कूल है। खेरागढ़ (या खैरागढ़) इसी नाम की तहसील का

केन्द्र-स्थान है। यह उतांगन के बायें किनारे पर आगरे से १८ मील दक्षिण पश्चिम की ओर है। यह एक ऊँचे पुराने खेर पर बसा हुआ है। इसी से इसे खेरागढ़ कहते हैं; इसके पड़ोस में उत्तर की ओर एक पुराना टीला है। पूर्व की ओर टेमू टीला है। कहते हैं कच्चे गढ़ के नीचे और भी अधिक पुराने पक्के किले के खंडहर थे। जाटों और मरहठों के शासन काल में यह तहसील का केन्द्र स्थान था। ब्रिटिश शासन के आरम्भ में यहाँ तहसील न रही। १८४२ में यहाँ फिर तहसील हो गई। १८६३ में इसका नाम खेरागढ़ से बदल कर सरकारी नाम खैरागढ़ कर दिया गया लेकिन स्थानीय लोग इसे खेरागढ़ ही कहते हैं। यहाँ तहसील, थाना, डाकखाना और मिडिल स्कूल है।

खण्डौली गाँव आगरे से १० मील उत्तर की ओर अलीगढ़ को जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है। यहाँ से एक सड़क इतिमादपुर को जाती है। यहाँ थाना, डाकखाना, मिशन का अस्पताल और प्राइमरी स्कूल है। बाजार सप्ताह में दो बार लगता है। पड़ोस में मुगल काल के कुछ खंडहर हैं। क्वार के महीने में सैयद गुलाबशाह का मेला लगता है।

फिरावली इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। यहीं होकर आगरे से फतेहपुर सीकरी को पक्की सड़क जाती है। यह आगरे से १५ मील दूर है। यहां से अछनेरा और कागरोल को भी सड़कें जाती हैं। पहले फतेहपुर सीकरी तहसील का केन्द्र स्थान था। १८५० में तहसील उठकर यहां आ गई। तहसील पुरानी बारादरी में है जो एक चारदीवारी वाले बाग से घिरी है। इस बाग को बादशाही कहते हैं। तहसील के अतिरिक्त यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। चैत में कंसलीला और फूल डोल के मेले लगते हैं।

कोटला गांव मैनपुरी की सीमा के पास फीरोज़ाबाद तहसील के पूर्व में स्थित है। यहां फीरोजाबाद और टूंडला से आनेवाली सड़कें मिलती हैं। एक सड़क उत्तर की ओर अवा को जाती है। यहां डाकखाना और स्कूल हैं। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। दशहरा, मुहर्रम और फूल डोल के मेले लगते हैं। यह कोटला जागीर का प्रधान नगर है। जागीरदार की गढ़ी ५० फुट ऊंची दीवार और चौड़ी खाई से घिरी

है। मलपुरा गांव आगरे से ७ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर आगरे से खेरागढ़ को जानेवाली सड़क पर स्थित है। इसके पास ही आगरा नहर के राजवाहे हैं। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है। बाजार रविवार को लगता है। मरहठों के शासन काल में यहां एक किला था उनके अफसर यहीं रहते थे। यहीं एक हिन्दू छतरी है।

मिढ कुर गांव आगरे से फतेहपुर सीकरी को जानेवाली सड़क पर आगरे से १० मील दूर है। दक्षिण-पश्चिम की ओर एक किले के खंडहर हैं। यहां इस्लामशाह और उसके भाई आदिल खां से लड़ाई हुई थी। दूसरी बार १५५५ में यहां हेमू और इब्राहीम-शाह सूरी से लड़ाई हुई थी। यहां डाकखाना और मिडिल स्कूल है। यहां सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। यहां से मिट्टी के बर्तन बाहर बिकने जाते हैं।

नौगवां भदावर राज्य का केन्द्र स्थान है। यह यमुना के दाहिने किनारे पर बाह से १८ मील और आगरे से ५३ मील दूर है।

राजा का महल कुछ उंचाई पर बना है। यह एक

कच्ची दीवार और खाईं से घिरा है। यहाँ डाकखाना और स्कूल है। यमुना को पार करने के लिये राजा की नाव रहती है। नौनी गाँव खेरागढ़ से ८ मील दक्षिण पश्चिम की ओर नीची पहाड़ियों के पूर्व की ओर बसा है।

यहाँ के लोगों की धारणा है कि जो कोई इन पहाड़ियों के पेड़ों को काटेगा वह एक वर्ष के भीतर मर जायगा। इसी से वे हरे भरे पेड़ों से ढकी है। इसी से गाँव के पड़ोस का दृश्य बड़ा सुन्दर मालूम होता है। पहाड़ियों के नीचे बबूलों से ढका हुआ मैदान धौलपुर राज्य तक चला गया है। इसमें खेती नहीं होती है।

परनागाँव यमुना के दाहिने किनारे पर बाह से १० मील और आगरे से ५२ मील दूर है। यह सूर के नालों के बीच में बसा है। यह सड़क से कुछ दूर है। लेकिन यमुना को पार करने के लिये घाट है। एक ऊंचे टीले पर कच्ची गढ़ी है। यहाँ एक प्राइमरी स्कूल है।

पिनहाट आगरे से ३३ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। कहते हैं कि यह पाँडु या पाँडव हाट से बिगड़

कर बना है। भदावर के राजा ने चम्बल के नालों के ऊपर यहाँ एक बड़ा किला बनवाया था। चम्बल नदी यहाँ से १ मील दक्षिण की ओर बहती है। उसी ने यहाँ एक बाज़ार और पक्का ताल बनवाया। नगर के चारों ओर उसने एक चार दीवारी घिरवा दी। जाटों के शासन-काल में यह तहसील का केन्द्र स्थान था। यहाँ थाना, डाकखाना और स्कूल है। सप्ताह में दो बार बाज़ार लगता है। यहाँ चैत में देवी का और भादों कार्तिक क्वार और अगहन में बलदेव का मेला लगता है। यहाँ तीन मन्दिर हैं।

रनकूट आगरे से मथुरा को जानेवाली सड़क पर जी० आई० पी० रेलवे का एक स्टेशन है। उत्तर की ओर यमुना के किनारे स्नान करने के घाट बने हैं। यहाँ परसुराम का मन्दिर है जहां दशहरे को मेला लगता है। यहां थाना, डाकखाना और स्कूल है और बाज़ार भी लगता है।

सैयद गांव आगरे से धौलपुर को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यह आगरे से १७ मील दक्षिण की ओर है। पूर्व की ओर जी० आई० पी० की लाइन

समानान्तर चलती है। स्टेशन पास ही है यहां थाना डाकखाना और स्कूल है। शुक्रवार को बाज़ार लगता है। तांतपुर की खदानों से यहाँ पत्थर बहुत आता है और रेल द्वारा बाहर भेजा जाता है।

सरेंढी गांव आगरे से २४ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है खैरागढ़ तहसील ७ मील दूर है। मरहठों और जाटों के शासन काल में यह तहसील का केन्द्र स्थान था। १८४८ में तहसील यहां से हटकर खेरागढ़ को चली गई। यहीं लार्ड लेक और अम्बा जी राव इंगलिया के बीच में १८०३ में क्षणिक सन्धि हुई थी। यहां प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में एक बाज़ार लगता है।

शम्साबाद आगरे से १२ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां आगरे से राजाखेड़ा और फतेहाबाद से खेरागढ़ को जानेवाली सड़कें मिलती हैं। शमशेरशाह नामी एक फकीर की स्मृति में इसका यह नाम पड़ा। मरहठों और जाटों के शासन काल में यह एक तहसील का केन्द्र स्थान था। इस समय यहां थाना, डाकखाना और बाज़ार है। चैत में कंस लीला और भादों में बल्देव जी मन्दिर के पास जल-यात्रा का मेला लगता है।

सिकन्दरा गांव आगरे से मथुरा को जानेवाली सड़क पर आगरे से ५ मील दूर है। एक पक्की सड़क स्वामी गांव में कैलाश मन्दिर को गई है। स्वामी गांव के घाट में यमुना को पार करके दूसरी ओर मथुरा जिले के महावन को सड़क गई है। दूसरी सड़क आगरा छावनी से आती है। सावन के महीने में छड़ियों का मेला लगता है।

सुलतान सिकन्दर लोदी की स्मृति में गांव का यह नाम पड़ा। १८३७-३८ में अकाल में मिशनरी सोसाइटी ने यहां एक अनाथालय खोला इससे क्षुधा से पीड़ित और असहाय लोग अधिक संख्या में ईसाई हो गये। गदर में ईसाई बस्ती छिन्न भिन्न हो गई। शान्ति स्थापित होने पर सिकन्दरा में ईसाई बस्ती फिर बसाई गई। इस समय यहां एक ईसाई अनाथालय, मिडिल स्कूल, थाना और डाकखाना है।

कहते हैं सिकन्दर लोदी के समय का आगरा यहीं था। इसके पड़ोस में अनेक पुराने घरों के खंडहर हैं। सिकन्दर लोदी के समय की बारादरी अनाथालय के हाते में इस समय भी मौजूद है। यह लाल पत्थर

की एक वर्गाकार इमारत है। इसकी लम्बाई १४२ फुट है। यह दो मंज़िला है। निचली मंज़िल में ४० कमरे हैं। प्रत्येक कोने पर सुन्दर अष्टभुज बुर्ज है। बारादरी १४९५ ईस्वी में बनी। इसके बाद यहीं अकबर की रानी (जैपुर के राजा भगवान दास की बहिन) मरियम ज़मनी का मक़बरा बना। वह १६२३ में मरी। उसके बेटे जहांगीर ने उसका मक़बरा बनवाया।

पर सिकन्दरा अकबर के मक़बरे के कारण सब से अधिक प्रसिद्ध है। मक़बरे का बगीचा अकबर के जीवन-काल में ही तयार हो गया था। जहांगीर ने १५ लाख रुपये के खर्च से अपने पिता अकबर का मक़बरा बनवाया जो भारतवर्ष की प्रसिद्ध इमारतों में है। मक़बरे का हाता १५० एकड़ है और एक ऊंची दीवार से घिरा है। कोनों पर अष्टभुज बुर्ज हैं। चार दरवाज़े हैं। दक्षिणी दरवाज़ा सड़क के सामने है और सब से बड़ा है। यह सत्तर फुट से अधिक ऊंचा है संगमरमर से सजा है। फाटक के प्रत्येक कोने पर छोटी मीनारें हैं। दरवाज़े से मक़बरे तक पक्की सड़क जाती है। मक़बरा ४०० फुट लम्बे और ४०० फुट चौड़े सफेद

संगमरमर के चबूतरे पर बना है। यह पंच मंज़िला है। निचली मंजिल ३० फुट ऊंची और ३२० फुट लम्बी-चौड़ी है। ३२० फुट लम्बी प्रत्येक भुजा के बीच में दरवाज़ा है। दक्षिण की ओर प्रधान दरवाज़े से सम्राट (अकबर) की कब्र तक ढलवां मार्ग है। ३८ फुट वर्ग कमरा गहरे नीले अस्तर और सुनहरी पत्ती से सजा है। कब्र सादी है। पड़ोस के कमरों में अकबर की लड़कियों की कब्रें हैं। यहीं शाह आलम के बेटे की कब्र है। निचली मंज़िल के ऊपर की मंजिल कम ऊंची और छोटी है। दूसरी मंजिल १४ फुट ६ इंच ऊंची है। इस की प्रत्येक भुजा १८६ फुट लम्बी है। तीसरी मंजिल १५ फुट २ इंच और चौथी मंज़िल १८ फुट ६ इंच ऊंची है। चोटी वाली मंज़िल का संगमरमर का घेरा १५७ फुट है। फर्श से चोटी की ऊंचाई लगभग १०० फुट है बाहरी दीवार पर संगमरमर का काम है। कब्र के पत्थर पर अल्लाह अकबर बड़े अक्षरों में खुदा है। नीचे जल्ल जलालहू खुदा है। दीवारों पर अरबी में ईश्वर के ६ नाम हैं। कुछ ही दूर पर एक कामदार चौकी है कहते हैं इस पर प्रसिद्ध कोहनूर हीरा रक्खा रहता था और ऊपरी मंज़िल पर सोने और चांदी का छत्र था। मकबरे के पास ही चारदीवारी से घिरे हुये बगीचे में पांच महल हैं। इसे घिवाई महल भी कहते हैं।

जहाँगीर ने इसे जानबाई के रहने के लिये बनवाया था। चर्च मिशनरी सोसाइटी को दे दिया गया।

बाईं ओर सूरजभान का बाग है इसमें बड़ी बारीक कारीगरी है। कुछ आगे पूर्व को ओर ठोस लाल पत्थर का बना हुआ पूरा घोड़ा है। इसके सामने जहाँगीर के हिजड़े की सराय है। सराय के पीछे पक्का ताल है। यह १८० गज़ लम्बा और इतना ही चौड़ा है इसके पास ही सिकन्दर लोदी का मकबरा है इसके आगे दूसरे पक्के ताल के पास अकबर के एक पीर और मन्सबदार का एक मकबरा है। यह लाल पत्थर का बना है और खम्भों की छः पंक्तियों पर सधा है।

टूंडला कलकत्ते से दिल्ली को जाने वाली ईस्ट-इंडियन रेलवे की प्रधान लाइन का एक बड़ा स्टेशन है। यह आगरे से एक मील पूर्व में और इतिमादपुर से ३ मील दक्षिण-पश्चिम में है। यहाँ से एक पक्की सड़क आगरे से मैनपुरी को जाने वाली सड़क से मिल जाती है। आगे चलकर यह एटा को चली गई है। रेल निकलने के पहले टूंडला और पास वाले टूंडली गाँव को बहुत कम लोग जानते थे। रेल खुल जाने पर यह एक बड़ा जंकशन बन गया। यहां से शाखा लाइन आगरे को जाती है। स्टेशन के पड़ोस में रेलवे-कर्मचारियों की एक बड़ी बस्ती बस गई। यहां थाना, डाकखाना, सराय, बाज़ार और हाई स्कूल है।